प्रातःक्लास 12/5/68 ओमशान्ति शिवबाबा को याद करो विश्व का वर्सा .....
ओमशान्ति। बच्चे यह समझ गये और कोई दुनियां में मनुष्य नहीं जानते। सिर्फ़ तुम बच्चे ही जानते हो कि यह सृष्टि रूपी ड्रामा है। यह बातें सिर्फ़ तुम बच्चे ही समझ सकते हो। दुनियां की तो बात ही छोड़ो। भारत की ही बात है। बाप कहते हैं जब धर्म की ग्लानी होती है, मनुष्य दुःखी होते हैं, जब दुनियां पूरी होने को (हो)ती है तो बाप को आना पड़ता है नई दुनियां स्थापन करने लिए। सिवाय बाप के और कोई कर न सके। अभी नई दुनियां के लिए तो है एक पवित्रता, दूसरा फिर नॉलेज भी है। आत्मा पवित्र बनने से ठिकाणे लग जावेगी। अभी अपवित्र होने कारण कोई भी जा नहीं सकते। तो दो बातें हैं मुख्य। एक है बाप की याद, जो तुम अभी सीख रहे हो। बाप ड्रिल सिखा रहे हैं। कोई समय सभी का अटेन्शन जाता है कि हम बाप के बच्चे हैं। बाप को याद किया जाता है, टीचर से योग लगाया जाता है। फलाना टीचर हमको पढ़ाते हैं। तुम जानते हो वही टीचर हमारा बाप भी है। अभी पढ़ा रहे हैं। सुबह में बाप के रूप में योग लगाये रहे थे। बाप को याद करो। खैंचते थे। बाप में प्यार होता है वर्से का। टीचर में पढ़ाई के वर्से का प्यार होता है। जिस्मानी प्यार नहीं पढ़ाई का प्यार होता है। इसमें फिर रूहानी प्यार। यह दुनियां से बिल्कुल न्यारी चीज़ है। यह भी बच्चों को याद रखना है यह पुरुषोत्तम संगमयुग है बीच का। वास्तव में सच्चा–2 कुम्भ का मेला है यह। आत्माओं और परमात्मा का मेला एक ही बार 5000 बाद लगता है। बाकी तो जो भी मनुष्य तीर्थ यात्रा, गंगा स्नान आदि करते हैं, वेद–शास्त्र आदि पढ़ते हैं इन सभी का नाम है भक्ति। इसको ज्ञान नहीं कहा जा सकता। तुम समझते हो द्वापर से लेकर हम भक्ति में थे। भक्ति का भी बाप ने समझाया है। पहले–2 है अव्यभिचारी भक्ति। एक ही होती है। जैसे अभी तुम्हारा एक के साथ ही योग लगता है। वैसे पहले एक की ही भक्ति होती थी। यह तो सभी के बुद्धि में होगा। चक्र के राज़ को तो अच्छी रीत समझ गये हैं। भक्ति को भी समझ लिया। भक्ति और ज्ञान बिल्कुल अलग है। बाप आते ही हैं ज्ञान देने। भक्ति के लिए बाबा को नहीं आना पड़ता है। भक्ति तो अनेक प्रकार की होती है। एक भक्त की मत न मिले दूसरे से। कहां भी जावेंगे सभी की अलग–2 मत। सुनाने वालों की भी अलग–2 मत। तो अनेक प्रकार की भक्ति है। अनेक मतें हैं। कितने यज्ञ, तप ,दान, पुण्य, संध्या, गायत्री आदि–2 तुम भक्ति मार्ग में करते थे। भक्ति को जन्म जन्मांतर चलना ही है। कब से चली आई है यह भी तुमको ज्ञान मिला है। तो स्मृति में रहना चाहिए। अभी यह तो पक्का निश्चय हो गया भक्ति अभी ख़त्म होती है। अभी बाप आये हैं ज्ञान से नई दुनियां स्थापन करने। तुम यहां आते ही हो बाप से वर्सा लेने। नई दुनियां का वर्सा था। जो बच्चों ने पूरा किया। भक्ति भी पूरी की। अभी फिर ज्ञान सुन रहे हो। पतित से पावन ज़रूर बनना है। बाप पर फिदा होना है। बाप बिगर दूसरा कोई बात ही नहीं। अभी.....मिलने की तो बात है नहीं। मिलने की चीज़ है नहीं। यहां जिस्मानी बात तो है नहीं। यह है रूहानी बातें। तुम सभी बच्चियां चाहती हो शिवबाबा से मिले। माँ–बाप की तो भांकी चाहिए। अभी उन जिस्मानी माँ–बाप की तो भांकी मिलती है माँ–बाप का नेपाज लेते हैं। अभी यह तो है रूहानी बात। रूहानी बाप है ना। रूहानी माँ नहीं होती। रूहानी एक ही बाप। चित्र में भी सभी एक दो को अँगुली से इशारा करते हैं कि एक को याद करो। एक ही पतित–पावन है। तुमको पावन कैसे बनाते हैं याद से। तुम जानते हो हम बाबा की याद में खड़े हैं। बाबा का लव जिस्मानी बाप से अति ऊँच है। उनमें कशिश है तुम बच्चे भी वृद्धि को पाते रहते हो। कशिश से आते रहेंगे। बाप चकमक तो एवर प्योर है ना। पवित्र चीज़ अपवित्र को अपने तरफ खैंचती है। देवताएं पवित्र तो सभी को खैंचते हैं ना। कहां भी जाओ पवित्र की महिमा होती है। देवताओं की भी महिमा गाते है। भागवत आद में उन्हों की महिमा है। वेद उपनिषद् गीता आदि यह सभी हैं भक्ति मार्ग की सामग्री। यहां तुम आते ही हो ..... सुनने। यहां शास्त्रों आदि की बात नहीं। तुम्हारे पास कोई पुस्तक थी नहीं। करके नमूने लिए रखे होंगे। किसको दिखाने लिए। इनमें जैसे लिखा हुआ है। यहां तो भक्ति मार्ग की बात ही नहीं।

समझाने के लिए चित्र आदि भी रखा है। तो सिद्ध हो गीता का भगवान कृष्ण नहीं था। यह बात है अभी बड़ी। पहले–2 तो यह भारतवासियों को यह समझाना है। शास्त्र सभी खण्डन किये हुये हैं। किसने खण्डन किया? रावण सम्प्रदाय ने। एक मनुष्य ने यह शास्त्र आद पुस्तक सभी बनाये हैं। भक्ति मार्ग के लिए। एक बाप फिर ज्ञान सुनाते हैं। कहते हैं मैं इन सभी शास्त्रों को भक्ति मार्ग को जानता हूँ। मैं पढ़ा हुआ कुछ भी नहीं हूँ। मैं पढ़कर कोई सर्टीफिकेट आदि नहीं लेता हूँ। तुम सर्टीफिकेट ले सकते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बच्चे समझते हैं भगवानुवाचः है तो सही ना। मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ। आगे भी बाप ने ऐसा कहा होगा। जैसे अभी कहते हैं। हे बच्चों मैं तुमको राजयोग सिखाये रहा हूँ। तुम थे। फिर तुमने ऐसे ही भिन्न–2 नाम रूप में 84 जन्म ले तुमने राजभाग गवां दिया है। तुम ही यह थे। भारत खाली होता है ना। तुम ही भारत में थे। तो तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए। सारे विश्व में , राज्य में हम राज्य करते थे। बहुत सुख था। पहले नम्बर में श्री कृष्ण था। कितना उनको याद करते हैं। अच्छा आखरीन में कृष्ण फिर आवेगा या आवेगा ही नहीं। बाप समझाते हैं कृष्ण गोरा था। फिर 84 जन्म लेते–2 सांवरा बना है। सिर्फ़ एक कृष्ण तो नहीं। सारी उनकी राजधानी थी। क्राउन प्रिंस था तो राजाई थी ना। अभी वह खलास हो गये हैं। अभी फिर से तुम बनते हो। इस समय तो भारत में ढेर राजाएं हैं। विलायत में भी हैं। भारत में था ही राजाओं का राज्य। डायरैक्टरी में लिस्ट होती है सारी। फलाना महाराजा फलाने देश का इतनी जागीर है। सब लिखा हुआ होता है। कोई को 10 लाख, कोई को 5लाख। कम से कम लाख ज़रूर होती है। फिर नम्बरवार। जिसको लाख देते हैं तो उनसे 20 लाख पैदाइश होगी। पैसे के लिए माथा मारते हैं ना। सभी व्यापार आदि पैसे के लिए करते हैं। पैसे बिगर तो काम चल न सके। अभी तुम जानते हो बाबा के पास पैसे ही(की) बात ही नहीं। वहां जितने सोने, हीरों के महल होंगे वह फिर कहां भी न होंगे। सभी चीज़ कमती ही होती जाती है। सोने की ईंटों के महल बनाते थे। बच्चियां ध्यान में जाती है सोने की ईंटें देखती हैं। कहां देखते हैं? वैकुण्ठ में। सूक्ष्मवतन में नहीं। सूक्ष्मवतन में तो ईंटे होती ही नहीं। तुम वैकुण्ठ में जाते हो वहां सोने के महल आद देखते हो। यहां तो कुछ भी है नहीं। वहां सोने की ही बनते रहते होंगे। यहां भी मकान बनाने लिए ईंटें मिलते रहते हैं , मंगाते रहते हैं। वहां भी तो मकान आदि बनते हैं ना। सोने के महल बनते हैं। सोमनाथ का मन्दिर है ना। अजमेर भी सोने द्वारिका दिखाते हैं। मॉडल बना हुआ है। सोने का पानी चढ़ा दिया है। उस समय सोना सस्ता भी था। तुम्हारी तो फिर भी देहली ही रहती है। देहली को परिस्तान कहा जाता है। अभी तो कब्रस्तान है। देहली में एक मन्दिर में लगा हुआ है 5000 वर्ष पहले धर्मराज ने परिस्तान स्थापन किया था। गीता का अक्षर लिखा हुआ है। अभी वह बोर्ड है वा नहीं बाबा को मालूम नहीं है। विरला के पास तो पैसे बहुत हैं। जिनको बहुत पैसे होते हैं वह मन्दिर बनाते हैं। समझते हैं यह लक्ष्मी की आर्शीवाद है। लक्ष्मी कहां से लावेगी। ज़रूर नारायण चाहिए ना। महालक्ष्मी की पूजा करते हैं; परन्तु वह पैसे कहां से लावेगी। महालक्ष्मी को चार भुजा वाला बनाते हैं। ज़रूर दो भुजा उनके पति की होंगी। वह तो समझते हैं हम लक्ष्मी को पूजते हैं। नारायण तो याद भी नहीं होगा। यह नहीं समझते लक्ष्मी को चार भुजा कैसे होगी। ज़रूर दो उनके होंगे। जैसे रावण को दस सिर दिखाते हैं स्त्री के और पुरुष के। तो एक –2 के दो भुजाएं बनावेंगे। यह बातें पूजा करने वाले नहीं जानते। कितनी पूजा होती है। करोड़ों के अन्दाज़ में हो जाते हैं। महाल. कहते हैं; परन्तु है ल. ना. दोनों। मन्दिर भी बनाते हैं नर ना. का। उनमें भी चार भुजाएं देते हैं। अनेकानेक मन्दिर है। चित्र किसम–2 के बनाते हैं। पाण्डवों का भी कितने बड़े–2 चित्र दिखाते हैं। हाथी जितने बड़े मनुष्य। नाम रख दिया है पाण्डव। वहां द्रौपदी भी देखेंगे। निशानियां है; परन्तु कुछ जानते नहीं। बम्बई में एलीफेन्ट क्योज़ में देखे होंगे पाण्डव के चित्र। अभी तो तुम बच्चों को यह देखने करने का शौक नहीं है। तुम बच्चों को टाइम वेस्ट नहीं करना है। इन देखने करने में। तुमको तो होबी रहनी चाहिए। सर्विस की। शौक होता है

ना। कोई को घूमने का, कोई को घोड़ दौड़ का कोई को किसका। अभी तुम बच्चों को सभी हिरस छोड़नी है। घूमना–फिरना अमरनाथ जाना, कुछ भी देखने दिल नहीं होगी। सिवाय बाप को याद करने और कुछ नहीं बुद्धि में आवेगा। बाप को और चक्र को याद करना है। बस। और कोई हिरस नहीं। बाहर में किसको देखेंगे बन्दर–बन्दिरियां हैं जंगल में नाच करते रहते हैं। वहां क्या रखा है। तो समझदार तीखे बच्चे हैं वह समझते हैं यह तो सभी विनाश हो जाना है। हम क्या देखे। हमारे स्वर्ग़ के आगे तो यह तुच्छ है। हम तो चलते–फिरते बाप को याद करें। बाप से बुद्धि योग तोड़ कर कोई चीज़ में न लगावें। इतनी मेहनत करनी है अगर यह बनना है तो। बाप इनके लिए भी कहते हैं। जो खुद बनते हैं तो बाप कहेंगे बच्चे भी हमको फॉलो करें; परन्तु इतनी ताकत कहां। बाप के साथ सफाई सच्चाई भी चाहिए। सच्चे दिल पर साहेब राज़ी कहते हैं ना। सच्चे दिल से जो बाप को याद करते हैं वह उनके डायरैक्शन पर चलते हैं। यहां तो जैसे तुम बैंक में बैठ हो। अविनाशी बैंक में तुम्हारा जमा होता है। यहां तुम बिल्कुल सेफ्टी में हो। सदैव तो कोई बैठ न सके। यहां बाप डायरैक्ट बैठ ड्रिल सिखलाते हैं। सभी जगह तो ऐसे नहीं हो सकता। सर्वव्यापी तो नहीं है ना। मधुबन में है। कहेंगे मधुबन में है। दिन–प्रतिदिन ज़ोर दिया जाता है। ड्रिल सिखलाते हैं; क्योंकि बच्चे याद में कमज़ोर हैं; इसलिए बिठाया जाता है। सभी बच्चे सुनते हैं बाबा यहां बैठाते हैं तो सवेरे उठ कर बैठते हैं। करैन्ट तो फिर भी सम्मुख मिलती है। जो भी बच्चे बैठते होंगे उनका बुद्धियोग मधुबन में होगा। शिवबाबा को याद करने से ब्रह्मा भी याद आता होगा; क्योंकि इनमें शिवबाबा बैठा है। उनको याद करना है। शिवबाबा बैठा होगा मधुबन में मुरली चलाता होगा। सभी को ऐसे भासेगा। जिनका बुद्धियोग होगा। जानते हैं इनके रथ में इनके बाजु में शिवबाबा बैठे होंगे। इनके साथ ड्रिल सिखलाते होंगे। यह डबली सोने की नहीं है। यह तो लोहे की थी। इनमें बैठते–2 यह भी डबली सोने की हो जावेगी। हीरे जैसे बन जावेंगे। हीरे जैसा जन्म तो हीरे ही देंगे ना। हीरा कौन है? इस रथ में बैठे हैं। तो बच्चों का बुद्धि योग यहां हो जावेगा। इस रथ में बाबा बैठा है। वह मुरली सुनाते हैं। उन्होंने ही सभी राज़ बताये हैं। पतित–पावन भी वह बाप ही है। कहते हैं बच्चे मुझे याद करो मामेकं। वह एक बाप यहां सिखला रहे हैं। सभी का बुद्धि योग मधुबन में होगा। इस रथ में विराजमान शिवबाबा को याद करना है। वह तो मधुबन में बैठे हैं ना। उनको अनेक प्रकार के फुर्णे होंगे। तुमको यहां बाहर की फर्णे(फुर्णे) कम होगी; इसलिए तुम यहां (घ)ड़ी–2 आते हो रिफ्रेश होने लिए। फिर पक्के हो जाते हैं। मधुबन में मुरली बाजे यह भी गाया हुआ है। आगे थोड़े ही बातें समझते थे। आगे तो वृन्दाबन जाते थे। आगे तो वहां क्या था छोटी सी मूर्ति रखी थी। अभी तो बहुत बड़ा मन्दिर बनाया है; क्योंकि बहुत जाते हैं। तो बाप बैठ कर सभी बातें समझाते हैं सृष्टि का समाचार। तुम भक्ति मार्ग में क्या–2 करते थे। सतयुग में क्या–2 करेंगे। कितने वहां सुख मिलते हैं। यहां तुम आते ही हो सम्मुख पढ़ने। यहां तुमको धारणा अच्छी होगी। वहां इतनी नहीं होगी। बच्चे याद आते रहेंगे। बच्चों में बहुत लव होता है। बच्चों को छोड़ कर आते होंगे तो फिर फिक्र होता होगा। पता नहीं बच्चों की सम्भाल करते हैं या नहीं। अपनी चीज़ याद ज़रूर पड़ती है। यहां तो बाप कहते हैं अपने शरीर को भी याद न करो। आपे मरे तो मर गई दुनियां। हम बाप के बन गये हमारे लिए सारी दुनियां मर गई। यह सारी दुनियां कब्रदाख़िल होनी है। यह कुछ भी होगा ही नहीं। बाबा ने ज्ञान का तीसरा नेत्र दिया है। अभी हम अपने शान्तिधाम को याद करते हैं। जिसको वानप्रस्थ निर्वाणधाम कहते हैं। बाप कहते हैं तुम सभी की अभी वानप्रस्थ अवस्था है। बाप हमको शान्तिधाम ले जाते हैं। फिर सुखधाम में आवेंगे पढ़ाई के ताकत से। बाबा साथ नहीं देगा। न कोई बाबा भेज देगा। यह तो बना बनाया ड्रामा है। अभी पुरानी दुनियां की आयु पूरी होती है। फिर नई दुनियां शुरू होगी। वहां जाकर सभी कुछ नया बनाना पड़ेगा। नया कोई सभी कुछ तैयार थोड़े ही रखा होगा। यह तो तुम अभी पढ़ते हो देवता पद पाने लिए; इसलिए नई दुनियां नया महल चाहिए।

खानियां सभी तुमको नई मिलती है। दुनियां ही नई बन जाती है। यह चक्र फिरता रहता है। तुम ही साहूकार बनते हो। फिर ग़रीब। साहूकार तो ज़रूर बनेंगे ना। नहीं तो पढ़ाई किस काम की। तुम जानते हो हम विश्व के मालिक बनते हैं। गोल्डेन एज से आयरन एज, आयरन एज से गोल्डेन एज्ड। यह एक ही सृष्टि चक्र है। जो तुमको याद करना है। दैवी गुण भी धारण करनी है। किसको दुःख नहीं देना है। बहुत मीठा बनना है। टाइम लगता है। यह तो ठीक है। सेकण्ड में जीवन मुक्ति। तुम सभी स्वर्ग़ में आते हो ना। फिर है पढ़ाई पर। कोई तो भूल जाते हैं; इसलिए बच्चे आते हैं ब्लड से भी लिख कर देते हैं एग्रीमेन्ट कि हम अपनी शादी बरबादी नहीं करेंगे। आज भी एक बच्चा खून से लिख कर आया। बाबा कहते हैं अभी तो खुशी में हो; परन्तु खबरदार रहना। हमारे पास बहुतों की एग्रीमेन्ट रखी है, आज वह नहीं हैं। ऐसे न हो तुम भी न रहो। बोला नहीं बाबा। ऐसा कब नहीं होगा। याद रहता है हमने बेहद के बाप से प्रतिज्ञा की है। विल किया था। कम से कम वानप्रस्थ अवस्थ में विल तो कर दो। पिछाड़ी में बहुत दुःख लड़ाईयां मारा–मारी होनी है। अ(ा)पस में लड़ते रहते हैं। पैसे ही बरबाद करते हैं। कोई तो घुटके खाते हैं किसके नाम विल करें। बच्चे तो अच्छे नहीं हैं। फिर बच्ची को स्त्री को देखेंगे। विल किसको दें। बाप ने समझाया है इस समय विल करते हैं पापात्मा पापात्माओं को। यह पापात्माओं की दुनियां है। वह है पुण्यात्माओं की दुनियां। वहां तो होती है एक बच्चा और एक बच्ची। वह भी योगबल से। कितनी फर्स्ट क्लास शोभ(ा) होती है नैचरल। यहां तो शरीर को अच्छा बनाने लिए कितनी ब्यूटी करते हैं। वहां तो नैचुरल ब्यूटी रहती है। इनको अन नैचुरल कहा जाता है। वहां सभी नैचुरली है। प्रकृत्ति ही नहीं है ना। सभी चाहते हैं हम ऐसे गोरे बनेंगे। आजकल तो तुम देखते हो इस दुनियां का क्या हाल है। अभी तुम बच्चे जानते हो बाबा आया हुआ है हमको हीरे जैसा बनाने। देवताओं की महिमा बहुत भारी है। नॉलेज से ऐसे बनते हैं। बाप को भी सर्विसएबुल बच्चे ही पसन्द आवेंगे। जो अच्छी रीत बाप को याद करते हैं। बाप के दिल पर तब चढ़े जब औरों को भी आप समान बनावें। जो दिल पर चढ़ते हैं वही तख़्त पर बैठे। खून से तो लिखा शादी नहीं करेंगे; परन्तु दैवी गुण भी धारण करनी हैं। नॉलेज धारण करनी है। औरों को आप समान बनाना है। अगर राजाई पानी है तो बहुत पुरुषार्थ करना है। अहमदाबाद में देखो सरला है कितने को आप समान बनाती है। बहुत सेवा करती है। ज़रूर ऊँच पद पावेंगे। कोई तो कहेंगे उनसे भी हम जास्ती सर्विस करेंगे। सर्विस करनी चाहिए ना। ऐसे नहीं यह बन्धन है। बाबा ने कई बन्धनें खलास कर दिये हैं। बन्धन तो सभी को रहती ही है। छोटे–2 बच्चे थे शादी किये हुये, जवान बच्चे भी थे। हम बाबा के बन गये बस दुनियां की ख़त्म हो गई। सभी पैसे माताओं के हवाले कर दिये। माताओं की कमिटि बनाई। अभी तुम सम्भालो बच्चा कहे हमारा हिस्सा। दिल टूट जाती है। समझते हैं यह तो पवित्र नहीं बनते गोया हमारे कुल के नहीं। शूद्र कुल का है। बाप कहते हैं तुम हमारे कुल का नहीं हो। वह भी जानते हैं हम ब्राह्मण कुल के नहीं हैं। फिर कुछ न कुछ यज्ञ के लिए मदद करते हैं। सम्पूर्ण बनने में टाइम लगता है। कहा जाता है दे दान तो छूटे ग्रहण। सभी को देना होता है। जो भी है। तब ही ग्रहण छूटेगा। कुछ नहीं होगा तो सभी कुछ मिलेगा। इसमें ठगी चल न सके। सिवाय एक बाप के और कोई याद न पड़े तब मदद भी ऐसे मिलती है। इसमें सहन भी करना पड़ता है। सहन करने बिगर कब कुछ मिलता नहीं। यह आँखें बहुत ही क्रिमिनल हैं। भाई–बहन में भी क्रिमिनल दृष्टि आ जाती है। तो बाबा फिर कड़ी ऑर्डीनेन्स निकालते हैं कि भाई–2 समझो। बाप जो विश्व की राजाई देते हैं उनको बहुत–2 प्यार से याद करना है। बस उनके गले लगे ही रहें। और सभी बात ही भूल जाये। मैं आत्मा हूँ। यह बहुत प्रैक्टिस करनी है। एक बाप को याद करना है जिससे ही वर्सा मिलना है। हम आत्मा शरीर ले पार्ट बजाने आई हैं। अभी हमको घर जाना है। फिर इस छी–2 दुनियां में नहीं आना है। अच्छा मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

ओमशान्ति